मासिक RNI No. MPHIN/2004/14249

अक्षर वार्ता

मूल्य: 100 /-

वर्ष - 19 अंक - 8
(जून- 2023)
Vol - XIX Issue No - VIII
(June- 2023)

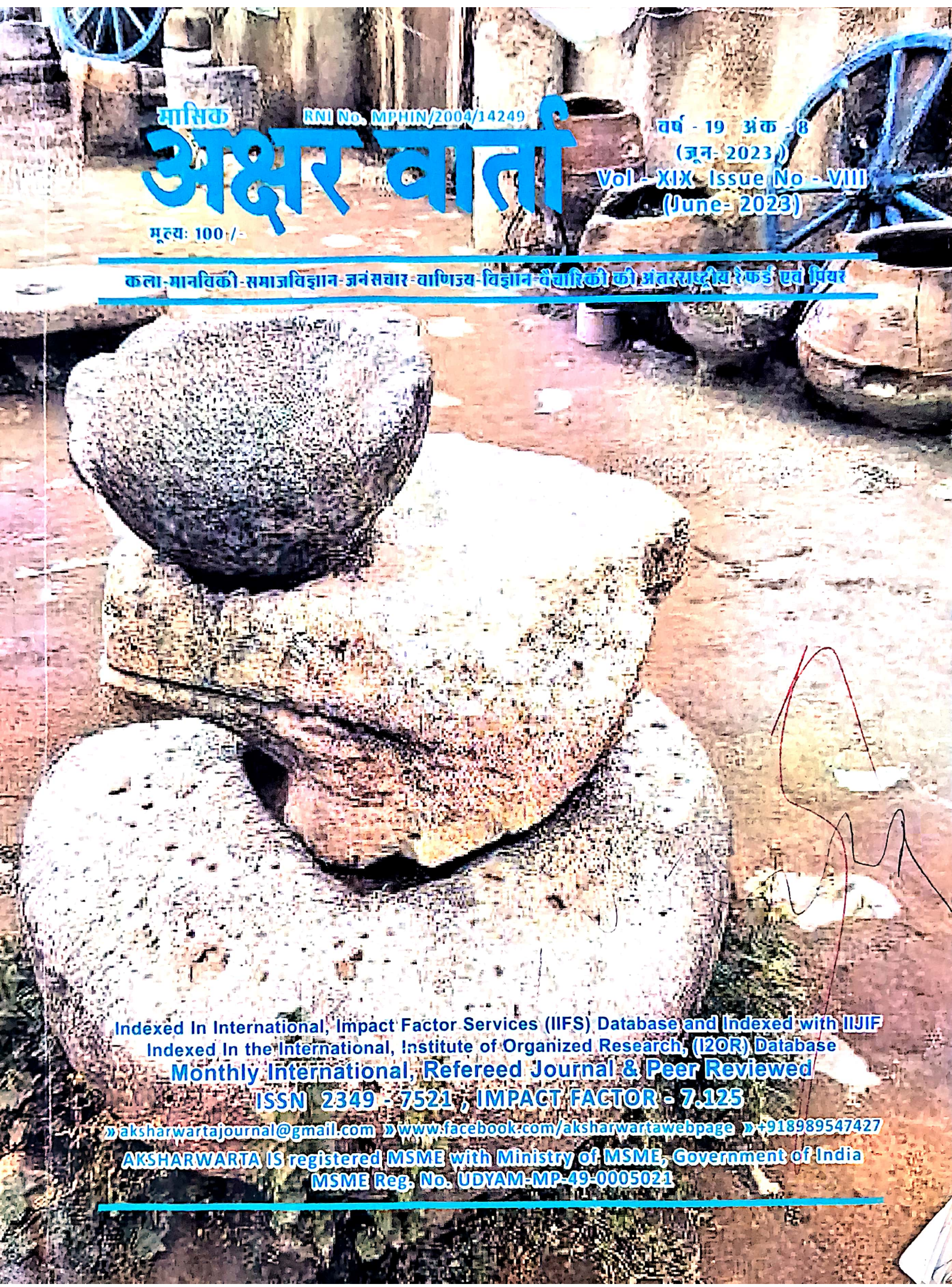

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर

Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed In the International, Institute of Organized Research, (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 7.125
» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427
AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

» गढ़वाल हिमालय के लोकगीतों में वर्णित सामाजिक चेतना
डॉ. डी. एस. भण्डारी 07

» मीडिया का साहित्योत्सव : कितना साहित्य - कितना उत्सव ?
सुभाषचन्द्र गुप्त 11

» तरुण जीवन का स्वप्निल कटु यथार्थ : 'तुम्हारे लिए'
डॉ. प्रतिमा 15

» हरियाणा तथा महिलाओं की स्थानीय स्वशासन में भागीदारिता
डॉ. रानी देवी 17

» साम्प्रदायिकता की समस्या और हिन्दी उपन्यास
डॉ. बालकृष्ण शर्मा 20

» हिन्दी उपन्यासों में जाति आधारित समस्याएं
अंजना शर्मा 23

» जाति का उन्मूलन : डॉ. अंबेडकर से आगे
मेवालाल 26

» भारतीय सौन्दर्य = दर्शन और महर्षि अरविन्द
डॉ. जितेन्द्र कुमार द्विवेदी 33

» नागार्जुन के काव्य एवं मानवीय जीवन मूल्य
डॉ. छोटेलाल गुप्ता 35

» नागार्जुन की कविताओं में प्रकृति
अच्युत शुक्ला 38

» ध्वनि - भेदा :
डॉ.ओमप्रकाश सांखोलिया 41

» रेणु की कहानियों के प्रमुख स्त्री चरित्र
रिकू शाह 45

» स्वतन्त्रता संग्राम और ठिकाणा सलूम्बर
रीना पांडेय 48

» ममता कालिया के कथा साहित्य में आर्थिक समस्याओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन
पारूल 50

» 21वीं सदी की कहानियों में वृद्धावस्था विमर्श
अनामिका, डॉ. विजय कुमार प्रधान 53

» शहरीकरण और आर्थिक विकास
डॉ. हरीश चंद्र तिवारी 59

» आर्य समाज शिक्षा और स्वतंत्रता संग्राम
कु. शालिनी लोधी, डॉ. अर्चना देवलिया 61

» भारत सरकार की वन नेशन वन राशन कार्ड योजना (राजस्थान की सहरिया जनजाति के संदर्भ में)
चन्द्रशेखर मीणा, डॉ. प्रमिला श्रीवास्तव 63

» हिंदी बाल साहित्य का आधार शिशुगीत
सत्येन्द्र कुमार सेन्डे - 66

» शैलीकार राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह तथा रामवृक्ष बेनीपुरी : तुलनात्मक अध्ययन
प्रो. राजेन्द्र साह 70

» गुरिल्ला युद्धकर्म : उद्भव एवं संकल्पना
प्रो. विजेन्द्र सिंह 74

» भारतीय काव्यशास्त्र में काव्यात्मा का प्रश्न और विभिन्न काव्यशास्त्रीय संप्रदाय
सुधीर कुमार अवस्थी 78

» प्रेमचंद का दलित चिंतन (संदर्भ : ठाकुर का कुँआ)
प्रियंका शाह 81

» सरकारी विज्ञापनों की अपनी भाषा और सामाजिक भूमिका का अध्ययन
डॉ. अमोल कृष्णराव गुल्हाने 83

» डॉ. सुषम बेदी की कहानियों में संवेदनाओं के विभिन्न स्वर
डॉ. रामावतार मेघवाल 86

» भारतीय चित्रकला में मिथकों की अभिव्यक्ति
डॉ. स्नेहल ओक लिमये 88

» भारत में जनसंख्या नियंत्रण - आवश्यकता एवं चुनौतियाँ "एक विश्लेषण"
डॉ. साहब सिंह 92

» छात्रों के सृजनात्मक कौशल विकास में शिक्षकों की भूमिका
मनोज कुमार सिंह, डॉ. शीला सिंह 98

» मन्नू भंडारी की कहानियों में मध्यवर्गीय मानसिकता
सोनम सोनी 102

» सूचना का अधिकार और जनविश्वास
डॉ. आशीष बृज 105

» "भारतीय संघवाद का बदलता स्वरूप-वर्तमान सन्दर्भ में एक अध्ययन"
ऋचा रानी 107

» अरूणाचल प्रदेश की जीशी जनजाती का प्रमुख त्यौहारः बूरी-बूत युल्लो
डॉ. आरती पाठक 109

» मरंग गोडा नीलकंठ हुआ में आदिवासी जीवन का समाजशास्त्रीय स्वरूप
डॉ. देवेन्द्र शर्मा 111

» ऐतिहासिक उपन्यास "रानी दुर्गावती" में राष्ट्रीय चेतना
बृजेन्द्र सिंह यादव, डॉ. पायल लिल्हारे 113

» चतुरी चमार - संघर्ष की ज्वलन्त मशाल
डॉ. मंजरी खरे 116

» भैरव प्रसाद गुप्त के उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना के विविध आयाम
किरण कुमारी 119

Scanned with OKEN Scanner

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 7.125
Vol - XIX, Issue - VIII, June - 2023
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

मीडिया का साहित्योत्सव : कितना साहित्य - कितना उत्सव ?

सुभाषचन्द्र गुप्त

हिन्दी विभाग, करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपुर, झारखण्ड

विगत कुछ वर्षों में 'लिटरेचर फेस्टीवल' के आयोजन का सिलसिला बड़ी तीव्रता, सघनता और भव्यता के साथ शुरू हुआ है। इस तरह के आयोजन एक ओर मीडिया घरानों की ओर से आयोजित हो रहे हैं तो दूसरी ओर कॉरपोरेट घरानों की ओर से। इस क्रम में कुछ प्रिन्ट मीडिया भी सक्रिय हुई हैं। 'साहित्य-उत्सव' के आयोजन चाहे जिस तरह के संस्थानों-प्रतिष्ठानों के तत्वावधान में आयोजित हो रहे हों, पर साहित्य के संदर्भ में सबके सरोकार और सबकी प्रस्तुतियों में समानता दिखायी दे रही हैं। सच यह है कि इस तरह के आयोजनों को ''आओ साहित्य-साहित्य खेलें'' का नव्य कलावादी आयोजन कहना गलत नहीं होगा। ऐसे प्रायोजित 'साहित्य-उत्सव' वस्तुतः खाये-पीये व अघाये लोगों के मनोरंजन के मंच की भूमिका निभा रहे हैं। एक दौर में पारसी रंगमंच जिस तरह के व्यावसायिक और कुरूचिपूर्ण प्रस्तुतियों के लिए जाना जाता था, बिलकुल उसी तरह की भूमिका मीडिया घरानों के द्वारा प्रायोजित साहित्य-उत्सव निभा रहा है। इन तथाकथित साहित्यिक कार्यक्रमों में जिस-तरह के लेखक, कवि, विचारक आमंत्रित किये जाते हैं, उनके लिए रचनाकर्म 'कमिटमेंट' नहीं है, वरन् एक 'कैरियर' है, धंधा है। खानापूरी के लिए हर आयोजन में एक-दो चर्चित और लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार भी शामिल कर लिए जाते हैं ताकि यह भ्रम बनाये रखा जा सके कि 'साहित्योत्सव' गंभीर और प्रतिबद्ध विमर्श हेतु आयोजित है, जबकि वास्तविकता में इस तरह के साहित्योत्सव का हिडेन एजेन्डा विशुद्ध रूप से मुनाफाधर्मी, बाजारधर्मी व कलावादी होता है।

मीडिया घरानों द्वारा आयोजित इस तरह के साहित्योत्सव अकारण नहीं है। इसके मूल में एक सोची-समझी वैचारिक और राजनीतिक रणनीति है और इस तरह की रणनीति हर दौर की लोकतंत्रविरोधी सत्ता अपनाती और लागू करती रही है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि धन की लगाम जिन हाथों में होती है, बौद्धिक आयामों का प्रबंधन भी उन्हीं हाथों में कैद होता है। राजनीति विज्ञान की शब्दावली में कहें तो यदि आपको यह समझना हो कि कोई भी सत्ता या राजनीतिक व्यवस्था कैसी है तो उसके विकास मॉडल यानी अर्थनीति की पड़ताल करें। प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था के पार्श्व में एक अर्थनीति होती है। अर्थनीति के बिना राजनीति नहीं होती। अर्थनीति के अनुसार राजनीतिक व्यवस्था अपनी व्यावहारिक दिशा-दशा तय करती है और अर्थनीति के पक्ष में जनता के दिलोदिमाग को मोड़ने के लिए साहित्य, कला, संस्कृति, शिक्षा, मीडिया, इतिहास, मिथक आदि बौद्धिक विमर्शों के आयामों को एक खास तरह की परिभाषा और व्याख्या के साँचें में ढ़ालकर पेश करती है और जहाँ इस तरह की कोशिशें सफल नहीं होती यानी जब अर्थनीति के विरोध में प्रतिरोध की आवाज उठने लगती है, तब सत्ता प्रशासन और सेना की मदद लेती है। स्पष्ट है कि अर्थनीति, राजनीति और समाजनीति या साहित्यनीति या शिक्षानीति या उद्योगनीति सब आपस में एक-दूसरे से जुड़ी हैं, इन्हें अलग-अलग करके देखना गलत होगा। यह पूरा सच है कि सोवियत संघ के विघटन के बाद दुनिया एकध्रुवीय हुई है और राजनीतिक स्तर पर अमेरिकी नेतृत्व में एक नयी व जटिल विश्व-व्यवस्था कायम हुई है जिसे भूमंडलीकरण, उदारीकरण या मुक्त बाजार-व्यवस्था का नाम दिया गया है। दरअसल जिसे भूमंडलीकरण कहा जा रहा है, वह 'भूमंडीकरण' है यानी दुनिया की मंडियों को-बाजारों को आपस में जोड़ने का साम्राज्यवादी अभियान। पुराना साम्राज्यवाद सेना के रथ पर सवार होकर आया था और यह नया साम्राज्यवाद बाजार के रथ पर आरूढ़ होकर विश्व-विजय के अभियान पर निकला है। इन बदली हुई परिस्थितियों का प्रभाव तीसरी दुनिया के तमाम देशों की अर्थनीति व राजनीति पर पड़ा है। सच यह है कि अमेरिकी साम्राज्यवाद के नेतृत्व में संचालित विकास मॉडल के समक्ष भारत सहित तीसरी दुनिया के तमाम विकासशील देश साष्टांग दण्डवत की मुद्रा में आत्मसमर्पण कर चुके हैं। एक ओर उदारीकरण की नीतियों के जरिए तीसरी दुनिया के देशों को अदृश्य रूप में आर्थिक गुलामी की जंजीर में जकड़ने की साजिशें लगातार जारी हैं तो दूसरी ओर उत्तर आधुनिकतावाद, उत्तरउपनिवेशवाद, उत्तर-संरचनावाद जैसी बौद्धिक वैचारिकी के जरिए सांस्कृतिक व मानसिक दासता के वृत्त में कैद करने के षडयंत्र हो रहे हैं। इस बदली हुई अर्थनीति और राजनीति का गहरा प्रभाव मीडिया-जगत पर भी पड़ा है। परिणामस्वरूप विगत कुछ वर्षों में लोकतंत्र का प्रहरी और चौथा स्तंभ मानी जानेवाली मीडिया का चेहरा भी बदला है और चरित्र भी। चूंकि जनता के मन-मस्तिष्क को रूपान्तरित और विचारान्तरित करने में मीडिया की वृहत्तर और ठोस भूमिका होती है, इसलिए राजनीतिक व्यवस्था मीडिया को अपने नियंत्रण में लेने का प्रयास करती है। नियंत्रण का प्रयास कहीं प्रत्यक्ष रूप में होता है तो कहीं अप्रत्यक्ष रूप में और हर दौर की पूंजीवादी-तानाशाही राजनीतिक व्यवस्था मीडियातंत्र को अपनी गिरफ्त में लेने की बर्बर कोषिषें करती रही हैं। राजनीतिक व्यवस्था मीडियातंत्र का इस्तेमाल करती है और मीडिया बौद्धिक आयामों को सत्ता-अनकूलित बनाने की प्रक्रिया में भागीदारी निभाती है।

यह पूरा सच है कि जबसे हमारे देश में उदारीकरण का दौर शुरू हुआ है, तमाम चीजें बाजार की कसौटी पर तौली-परखी जा रही हैं। लिहाजा कल्याणकारी राज्य की अवधारणा (वेलफेयर स्टेट) गौण होती गयी है और बाजारवादी अर्थनीति व राजनीति का फैलाव हुआ है। इस प्रक्रिया में बाजारवाद के गहरे प्रभाव के कारण मीडिया (प्रिन्ट मीडिया व इलेक्ट्रोनिक्स

Scanned with OKEN Scanner